Knowledgeable Research (KR) 2026, Vol., (5):02
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

संस्कृत वाङ्मय में ज्ञान –विज्ञान की प्राचीन परम्परा का अद्यतन अनुशीलन

अखिलेश कुमार *

सहायक आचार्य, प्रभारी संस्कृत विभाग, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर,उत्तर प्रदेश

Abstract

भारतवर्ष का संपूर्ण प्राचीन ज्ञान- भंडार संस्कृत साहित्य में ही है। भारतीयों के सभी धर्म -ग्रंथ,पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रंथ, दर्शन, महाकाव्य, नाटक, आख्यान, कथा- साहित्य आदि संस्कृत वाङ्मय में ही हैं ; इतना ही नहीं,काव्यशास्त्र, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति के प्राचीन ज्ञान- विज्ञान का कोई ऐसा अंग नहीं है जो संस्कृत साहित्य में उपलब्ध नहीं है। यह भारतीय प्राचीन ऋषियों, मुनियों,कवियों आदि के अथक परिश्रम का ही फल है कि इतना विस्तृत साहित्य संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है । भारतीय साहित्य में सर्वाधिक महत्व वेदों को प्राप्त है, उन्हें सभी प्रकार के ज्ञान का भंडार कहा गया है।भारतीय परंपरा वेदों को ही विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ मानती है। वेद ही गुण ज्ञान -विज्ञान के आश्रय हैं। भारतीय साहित्य में वेदों के गुना का गौरव -गान सदैव किया जाता रहा है। विभिन्न भारतीय एवं पश्चात विद्वानों ने वेदों के चिंतन-मनन में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वेदों के उपरांत उपनिषदों में प्राचीनतम ज्ञान का उत्कृष्ट रूप मिलता है। वैदिक साहित्य में वर्णित ज्ञान विज्ञान के अनुसंधान में मानव जाति को एक नई दिशा प्रदान की। वैदिक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का भी उदात्त रूप मिलता है।

मानव जीवन में वैदिक साहित्य का महत्व दोनों प्रकार से है चाहे वह आध्यात्मिक हो या फिर सांसारिक। वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों ,आरण्यकों ,उपनिषदों एवं वेदांगों की गणना वैदिक साहित्य के अंतर्गत की जाती है। इनमें आध्यात्मिक एवं सांसारिक ज्ञान विज्ञान का भंडार मिलता है। उपनिषदों में तो यह सूचना आध्यात्मिक ज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है। सामाजिक संगठन की दृष्टि से भी वेदों में सभा और समिति जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं का वर्णन मिलता है। जो तत्कालीन समाज का प्रतिनिधित्व करती थी और समाज को व्यवस्थित एवं गतिशील बनाए रखने में सहायता प्रदान करती थी। प्राचीन भारतीय इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है,इसके माध्यम से अतीत के हजारों वर्षों के इतिहास का पता लगाया जा सकता है। वैदिक साहित्य के उपरांत लौकिक संस्कृत साहित्य का समय आता है। लौकिक संस्कृत साहित्य के अंतर्गत रामायण महाभारत पुराण आदि का समावेश किया जाता है। लौकिक संस्कृत साहित्य में भी मानव जीवन के आचारों विचारों का उत्कृष्ट रूप का वर्णन किया गया है।

Keywords: *भारतीय ज्ञान परंपरा, धर्म -दर्शन,ज्ञान- विज्ञान ,वेद ,आयुर्वेद।*

Received: 08/01/2026
Accepted: 26/02/2026
Published: 28/02/2026

***Corresponding Author:**
अखिलेश कुमार
Email: ahkumar29@gmail.com

प्रस्तावना - मनुष्य -जीवन के लाखों वर्षों के विकास यात्रा के पश्चात् लिपियों का जन्म एवं विकास हुआ। तत्पश्चात मनुष्य ने लिखना आरंभ किया जो मनुष्य पूर्व में अपने भाव -विचारों को ध्वनि- संकेतों एवं चित्रों के माध्यम से व्यक्त करता था, वही अब ध्वनि-चिह्नों एवं लिपियों के माध्यम से लेखन द्वारा करने लगा । इसी क्रम में भारतीय ऋषियों, महर्षियों आदि ने संस्कृत भाषा में मानव जीवन के आध्यात्मिक एवं सांसारिक जीवन से संबंधित ज्ञान का सृजन किया। संस्कृत साहित्य का यही गुण ज्ञान निरंतर वट वृक्ष की भांति विशाल एवं विस्तृत होता चला जा रहा है। डॉ देवराज के मत में भारतीय संस्कृति के निर्माण में संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक योगदान है,इस सत्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसी संस्कृत साहित्य के अनुशीलन से भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति का इतिहास स्वतंत्र गौरवपूर्ण बन सका । परिणामस्वरुप भारतीय संस्कृति ने सभ्यता के अधिप्राचीन कल से ही विश्व में अत्यंत आदरपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति सदैव विश्वबंधुत्व एवं "वसुधैवकुटुम्बकम्" की पोषक रही है। अपनी इसी भावना के कारण ही जहां प्राचीन विश्व की समकालीन संस्कृतियां पूरी तरह काल -कवलित हो गई वहां भारतीय संस्कृति वर्तमान में भी जीवंत एवं सबके लिए ग्राह्य बनी हुई है। ऐसी गरिमामयी संस्कृति भारतीय जनमानस को संसार में सदा गौरवान्वित करती रहती है। संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का प्रधान वाहक रहा है। इसने सदैव भारतीय संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान की है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीन भारतीय संस्कृति को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-प्राग्वैदिक एवं वैदिक काल । प्राग्वैदिक काल के अंतर्गत पाषाणकाल एवं धातुकाल

की गणना की जाती है। उनके विषय में हमारे ज्ञान का एकमात्र साधन पुरातत्व ही है। धातुकालीन सभ्यता में सिंधुघाटी सभ्यता अथवा हड़प्पा सभ्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दुर्भाग्यवश इसके लिपि का उद्घाचन न होने से इसके अधिकांश बौद्धिक पक्षों के विषय में हमारा ज्ञान अनुमानपरक मात्र ही है। कालांतर में सिंधु संस्कृति के उपरांत भारतवर्ष में जो नवीन सभ्यता का उद्भव एवं विकास हुआ उसे वैदिक सभ्यता कहा जाता है , इस वैदिक सभ्यता में प्रचलित भाषा वैदिक भाषा या संस्कृत भाषा थी,इसी संस्कृत भाषा में प्राचीन ऋषियों, कवियों तथा तत्वज्ञों ने वैदिक साहित्य की रचना की। वैदिक काल में ही संभवत: विश्व की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद की रचना हुई। ऋग्वेद की रचना के बाद अन्य वैदिक ग्रंथों की सृष्टि की गई। प्राचीनता की दृष्टि से वैदिक साहित्य सर्व प्राचीन हैं इतना प्राचीन साहित्य विश्व में कहीं भी उपलब्ध नहीं है पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में मिस्र का साहित्य प्राचीनतम माना जाता है किंतु वह भी कितना प्राचीन है विक्रम से केवल 4000 वर्ष पूर्व। भारतीय विद्वानों ने अपने अकाट्य के तर्कों एवं प्रमाणों के साथ ऋग्वेद को विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ सिद्ध करके पाश्चात्य विद्वानों के इस मत का खंडन कर दिया है, उनके अनुसार विश्व साहित्य के सर्वप्रथम ग्रंथ ऋग्वेद की सृष्टि आज से लगभग 8000 वर्ष पहले हो चुकी थी, तब से साहित्य सृजन की जो धारा प्रवाहित हुई वह आज तक अविच्छिन्न गति से चली आ रही है।

भारतीय विद्वानों के निरंतर परिश्रम के परिणाम स्वरुप इतना विस्तृत साहित्य संस्कृत में प्राप्त होता है कि भारतीय साहित्य की विपुलता को देखकर बुद्धि अचंभित रह जाती है। भारतीय पांडुलिपियों की विपुल सूचियां भारत तथा यूरोप के पुस्तकालयों में सर्वत्र हजारों लेखकों एवं ग्रंथों के नाम गिनाती हैं। भारतीय वैदिक संस्कृत साहित्य के सूक्ष्मतम अध्ययन कर्ताओ में बाल गंगाधर तिलक, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि विद्वानों का विशेष योगदान रहा है भारतीय साहित्य की प्राचीनता, व्यापकता,ज्ञान ,विज्ञान की उत्कृष्टता तथा मानव संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से उसका मूल्य- यह सब चीज हैं ,जो पाश्चात्य विद्वानों को इसकी महत्ता, मौलिकता एवं प्राचीनता की ओर बलात् आकर्षित करती हैं। मैक्स मूलर,ए. वेबर जैकोबी,विंटरत्ज, मैकडॉनल्ड ,विलियम जोन्स आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय साहित्य अर्थात् संस्कृत साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। भारतीय ज्ञान परंपरा में यह प्राचीन संस्कृत साहित्य ही था, जिसके द्वारा विश्व के इतिहास में एक युगांतर आया तथा परिणामस्वरुप अब हम पूर्व और पश्चिम के भूले प्रागैतिहासिक संबंधों में कुछ-कुछ अवबोध करने लगे थे ।भारतीयों के प्रबुद्ध विचारों ,दार्शनिक चिंतनों तथा ज्ञान -विज्ञान की अनुपम उपलब्धि के मार्मिक ज्ञान के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन एवं अनुशीलन अनिवार्य है ।वैदिक साहित्य इतिहास और गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान के लिए तथा वाल्मीकि ,व्यास, भास, भवभूति, कालिदास, बाणभट्ट आदि के उदात्त- सौंदर्य ,रचना- चातुर्य ,प्रकृति- प्रेम और आदर्श जीवन -दर्शन के लिए लौकिक संस्कृत साहित्य का यथार्थबोध अत्यावश्यक है ।इसके द्वारा ही संपूर्ण विश्व का आध्यात्मिक व सांसारिक कल्याण का मार्ग प्रसिद्ध हो सकता है।

समस्या की पृष्ठभूमि -वर्तमान में आधुनिकता की भौतिकतावादी चकाचौंध से प्रभावित आज की युवा पीढ़ी अपने गौरवपूर्ण अतीत को भूलतती जा रही है । वर्तमान की युवा पीढ़ी हर प्रकार के ज्ञान एवं समस्या के समाधान लिए गूगल, याहू जैसे सर्च इंजनों तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर निर्भर हो चुकी है, किंतु इन वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग के साथ ही साथ साहित्य का अध्ययन भी अत्यावश्यक है ।संस्कृत साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन से वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के साथ ही साथ मानवीय गुणों जैसे- दया,दान क्षमा, सत्य, परोपकार, आदि का भी विकास होता है ।एक मानवीय एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त व्यक्ति संपूर्ण विश्व के कल्याण में योग दे सकता है।

उद्देश्य- प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत संस्कृत साहित्य में ज्ञान विज्ञान की उपादेयता की भावना से परिचय करवाता है तथा वर्तमान में संस्कृत साहित्य के प्राचीनता,मौलिकता तथा उपयोगिता का रेखांकन करते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का महत्वपूर्ण पथ प्रशस्त करता है ।आज की युवा पीढ़ी के मन - मस्तिष्क में भारतीय साहित्य के अंतर्गत संस्कृत साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन द्वारा गौरवान्वित होने का अवसर उपलब्ध कराते हुए तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है।

शोध प्रविधि-प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा व्याख्यात्मक शोध प्रवेश के माध्यम से उपरिक्त शीर्षक का अध्ययन किया गया है। इस प्रविधि से यह स्पष्ट होता है कि हमारे प्राचीन ऋषि एवं मुनियों में अपने शोध अनुभव उत्तर के आधार पर ज्ञान विज्ञान पर आधारित अनेक महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित किए थे व्याख्यात्मक शोध प्रविधि वर्तमान में संस्कृत साहित्य में ज्ञान विज्ञान के अनुशीलन के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित करता है, और उन्हें समझने, विश्लेषित करने और उपयोगिता सिद्ध करने का प्रभावी साधन है।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

ज्ञान विज्ञान का निदर्शन - संस्कृत साहित्य भारतीय समाज के उत्कृष्ट विचारों का सुंदर दर्पण है। भारतवर्ष में भौतिक जीवन के उपकरणों का सौलभ्य होने के कारण भारतीय समाज जीवन के विकट संघर्ष से स्वयं को पृथक् रखकर आनंद की अनुभूति तथा शाश्वत आनंद की उपलब्धि को अपना लक्ष्य मानता है। इसलिए संस्कृत साहित्य जीवन की विषम परिस्थितियों के भीतर से आनंद की खोज में संलग्न रहा है। अंत:करण के आनंद- अन्वेषण के साथ ही साथ विभिन्न ज्ञान -विज्ञान पर भी अनुसंधान चलता रहा है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य में तात्विक चिंतनों एवं अन्वेषणों के साथ ही साथ अनेक काव्य,काव्यशास्त्र, आयुर्वेद,संगीत आदि क्षेत्र में भी चिंतन -मनन तथा अनुसंधान निरंतर चलता रहा है,जिसके परिणामस्वरुप ही संस्कृत साहित्य में अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों का सृजन हो सका है । शिवराजाचार्य ने भी इस स्मृति ग्रंथों की व्याख्या में प्राचीन ऋषियों एवं मुनियों की कथन को स्वीकार करते हैं कि वेद ही सबसे प्राचीन और सभी ज्ञान से परिपूर्ण हैं।वैदिक ग्रंथ ही संपूर्ण ज्ञान का उत्स है। हमारे उपनिषद इसी बात की उद्घोषणा करते हैं-

सर्वज्ञानमयो हि स:।मनु0 2/7

शर्मा जी के कथानुसार संस्कृत साहित्य दार्शनिक चिंतन की दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय दर्शन का आरंभ वेदों से माना जाता है ।अधिकांश भारतीय दर्शन वेदों को अपना आदि श्रोत मानते हैं। प्राचीन भारतीय दार्शनिक परंपरा अनुसार नौ दार्शनिक संप्रदाय हैं-सांख्य(कपिल मुनि),योग(पतंजलि),न्याय(गौतम), वैशेषिक(कणाद), मीमांसा(जैमिनी), वेदांत(बादरायण)चार्वाक(बृहस्पति)जैन(ऋषभदेव), बौद्ध (गौतमबुद्ध)। इनमें से प्रारंभ के छ: दर्शन आस्तिक दर्शन कहलाते हैं तथा अंत के तीन दर्शन नास्तिक दर्शन माने जाते हैं। संस्कृत साहित्य में जितना महत्वपूर्ण विवेचन दर्शन का हुआ है उतना ही ज्योतिष और वास्तशास्त्र का भी हुआ है ज्योतिष को तो वेद पुरुष का नेत्र कहा गया है। वास्तु शास्त्र का अंतर्गत भवन आदि के निर्माण के लिए दिशा ,भूमि आदि के निर्धारण किया जाता है-गृहस्थस्य क्रिया सर्वा न सिद्धं गृहं बिना। आज भी वेदांगज्योतिष(लगधमुनि) एवं वास्तुचिंतामणि (रामचंद्र कौल) अधिक प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धत का नाम आयुर्वेद है । प्राचीन भारतीय आयुर्वेदाचार्यों में अश्वनी कुमार धनवंतरी, च्यवन, चरक (चरक संहिता) सुश्रुत (सुश्रुत संहिता) वाग्भट्ट (अष्टांग हृदयम्)आदि प्रसिद्ध हैं।

शर्मा एवं शर्मा ने भी इसी तथ्य का समर्थन किया है कि सामाजिक - राजनीतिक जीवन से संबंधित चाणक्य का अर्थशास्त्र सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसी ग्रंथ में राज्य के आवश्यक सप्तांगों का उल्लेख है। कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में चतुर्थ विद्याओं की विस्तृत चर्चा की है - आन्वीक्षिकीत्रयीदण्डनीतिश्च विद्या:। इसी प्रकार जीवन में राजनीति से संबंधित चाणक्य का अर्थशास्त्र सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

ऐतिहासिक दृष्टि से कल्हणकृत राजतरंगिणी प्रथम ऐतिहासिक रचना मानी जाती है। गणित में लिखित पुस्तक आर्यभट्ट कृत आर्यभट्टीयम् तथा भास्कराचार्य कृत लीलावती सर्वाधिक प्रसिद्ध है। संस्कृत साहित्य में भूगोल और खगोल विज्ञान में भी अनेक सिद्धांतों की स्थापना हजारों वर्ष पूर्व हो चुकी थी ।इस क्षेत्र में वराहमिहिर (बृहत्संहिता) का नाम अधिक प्रसिद्ध है,जो एक महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थे।

भारतीय संगीत का जनक तो सामवेद को ही माना जाता है सामवेद भी ही संगीत का सर्वप्रथम वर्णन मिलता है गायन वादन एवं नर्तन तीनों कलाओं का समावेश संगीत में माना गया है भारतीय आचार्य ने संगीत को पंचम वेद माना है भरतमुनि की प्रसिद्ध रचना नाट्यशास्त्र है इसमें नाटक, नृत्य एवं संगीत के मूल सिद्धांतों का विषद् वर्णन किया गया है।

राष्ट्रीय भावना का भी सर्वश्रेष्ठ निदर्शन वेदों में भी मिलता है अथर्ववेद में तो यहां तक कहा गया है पृथ्वी मेरी माता है मैं उसका पुत्र हूं- "माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:"। भारतीय संस्कृति "वसुधैव कुटुंबकम्" की पोषक है । संस्कृत साहित्य में विश्व कल्याण एवं विश्व बंधुत्व की भावना का चूडांत निदर्शन प्राप्त होता है । इसमें अपने -पराये के भेद को भूलकर आपस में मिलजुल कर रहने की भावना पाई जाती है-

अयं निज:परोवेत्ति गणना च लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।। 69 हितो०

आधुनिक जीवन में जितना महत्व वैदिक साहित्य का है उतना ही लौकिक संस्कृत साहित्य का भी है। जहां वैदिक साहित्य प्राचीन ज्ञान विज्ञान का अक्षय भंडार बना हुआ है वहां अलौकिक संस्कृत साहित्य भी जीवन पाठ का पथ प्रदर्शक बना हुआ है वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य में पुरुषोत्तम राम के उड़ते चरित्र का निरूपण बहुत सुंदर ढंग से करके मनुष्य के लिए सर्वोत्तम करनी बना दिया है राम जैसे पात्रो के चरित्र के अनुशीलन से व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में योग दे सकता है। रामायण के पश्चात दूसरा सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य महाभारत है, जिसके कर्ता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास हैं। महाभारत के भीष्म पर्व में

वर्णित श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को श्रीमद्भागवद्गीता का अमृतोपदेश तो संपूर्ण विश्व की मानव -जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति की प्राणस्वरूपा है। श्रीकृष्ण ने महाभारत के भीष्म पर्व में अर्जुन को जिस गीतामृत का पान कराया,वह संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए था । इसमें आत्मा और परमात्मा का सूक्ष्म विवेचन तथा उनका सम्बन्ध जैसा श्रीमद्भगवद्गीता में है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।श्रीकृष्ण ने उपनिषदों के संपूर्ण ज्ञान को साररूप में श्रीमदभागवद्गीता के 18 अध्याय में भर दिया ।कर्म, ज्ञान और भक्ति के योग का उपदेश सदैव संपूर्ण मानव जाति का कल्याण में समर्थ है।इसमें वर्णित निष्काम कर्म योग सर्वश्रेष्ठ सिद्धांत है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन् ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्व कर्मणि।।2/47

इसी प्रकार अन्य दूसरे महाकाव्य, नाटक आदि लौकिक संस्कृत साहित्य ग्रंथ आज भी भारतीय जनमानस के लिए अनुकरणीय बने हुए हैं।

निष्कर्ष-भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत साहित्य का विशिष्ट स्थान है । भारत के साथ ही साथ सम्पूर्ण विश्व के लिए संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान- विज्ञान मात्रा ऐतिहासिक थाती ही नहीं, अपितु वर्तमान एवं भविष्य के लिए उपयोगी एवं पथप्रदर्शक भी है। इसमें संपूर्ण विश्व में भारतीय ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार किया अनेक संस्कृत ग्रंथों की विभिन्न देशी एवं विदेशी भाषा में अनुवाद हुआ है। भारत के साथ ही साथ सम्पूर्ण विश्व के लिए संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान- विज्ञान मात्रा ऐतिहासिक थाती ही नहीं, अपितु वर्तमान एवं भविष्य के लिए उपयोगी एवं पथप्रदर्शक भी है। प्राचीन भारतीय ज्ञान- विज्ञान के अनुशीलन के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन अंत्य आवश्यक है संस्कृत साहित्य सदैव भारतीयों को अपने ज्ञान -विज्ञान के लिए गौरवान्वित करता रहेगा।

संदर्भ सूची

1. डॉ. देवराज,(2010) भारतीय संस्कृति, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, सं.6 पृ.1-2

2. शर्मा, चंद्रधर (2013)भारतीय दर्शन :आलोचना एवं अनुशीलन मोतीलाल बनारसी दास सं. 6 पृ.1-233

3. कौन्डिन्नायन, शिवराजाचार्य (2017)मनुस्मृति- व्याख्या का चौखंभा विद्याभवन प्रकाशन वाराणसी पृ. 94

4. शर्मा, अंजना एवं शर्मा, गोपाल गिरधर (2018) चौखंभा प्रतियोगिता प्रकाश, चौखंभा सुरभरती प्रकाशन वाराणसी,पृ.7.6-7.7

5. द्विवेदी,कपिलदेव (2015) वैदिक साहित्य एवं संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सं. 6 पृ.109

6.झा, तारिणीश (1885) हितोपदेश:मित्रलाभ, (हिंदी अनुवादक)रामनारायणलाल विजयकुमार इलाहाबाद, पृ.101-102

7.गोयन्दका, जयदयाल (संवत.2071) तत्वविवेचनी हिंदी टीका: श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर पृ.88-90

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)